ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

जैनेन्द्र के त्यागपत्र उपन्यास में नारी व अन्य पात्रों का स्वरूप

डॉ. सुमन कुमारी असि0प्रो0 (हिन्दी) राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चम्पावत (उत्तराखण्ड)

सन् 1925 के उपरान्त ऐसी परिस्थतियों का उदय हुआ जहाँ व्यक्ति का संघर्ष बाहरी जगत की अपेक्षा आन्तरिक जगत से शुरू हुआ। इस संघर्ष की उदीप्ति एक ओर उस काल की राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक तथा सौन्दर्य बोध ही नयी परिस्थतियों के कारण हुई तथा दूसरी ओर मनोविज्ञान के क्षेत्र में मनोविश्लेषण की नई–नई पद्धतियों और परिस्थितियों से भी उद्दीप्ति हुई। जैनेन्द्र जी ने इस संघर्ष को व्यक्ति के धरातल पर बहुत ही प्रखर रूप में उपस्थित किया है और इसके लिये उन्होनें प्रतिनिधि पात्र स्त्री को बनाया। जैनेन्द्र की स्त्री पात्र का अत्यन्त उल्लेखनीय रूप उसका संघर्ष ताप तथा व्यथा की अभिव्यक्ति है। यह वह मानवीय तत्त्व है जो हमें स्त्री के प्रति एक व्यापक बोध देता है। त्यागपत्र में मृणाल के इसी हृदय ताप को समझने में लेखक असमर्थ है। कथा क्षेत्र में स्त्री को आधार बनाना विशेष रूप से जैनेन्द्र से शुरू होता है। इस काल तक आते–आते पारिवारिक परिवेश ही सही किन्तु स्त्री को एक व्यक्तित्व मिलने लगा है। जो नारी अभी तक पत्नी माँ बहन विधवा वैश्या आदि विविध रूपों में मर्यादित लीक पर ही चलती रही वहीं जैनेन्द्र की नारी पुरानी परम्परा की लीक से हटकर यथार्थ की पगडण्डी की ओर मुड़ने का प्रयत्न करती देखी जाने लगी। त्यागपत्र की मृणाल का आन्तरिक विद्रोह इतना तीव्रतम होता है। कि पति का घर छोड़कर किसी निम्न स्तर के व्यक्ति के साथ रहकर भी वह अपने को पाविष्ठा नहीं समझती। जैनेन्द्र के उपन्यासों की नारी बाह्य जगत की सामाजिक समस्याओं में ध्यान न देकर अपनी वैयक्तिक व्यथा एवं समस्याओं पर ध्यान देने लगी। अपने आन्तरिक जगत में प्रवेश करके अपनी आन्तरिक वृत्ति अपना अचेतन मन, अपनी प्रेम कल्पना और वासना आदि पर साधिकार रूप से अपना मनोमंथन करने लगी। वह अपने यथार्थ रूप को पहचान आन्तरिक चेतना से परिचालित होकर नैतिकता अनैतिकता वासना का प्रेम का सामाजिक बन्धनों का संस्कृति एवं परम्परा का संकोच न कर सभी के प्रति सजग होकर विचारशील चिन्तनशील और प्रयत्नशील हो उठी है। उसकी सजगता सिर्फ वैयक्तिक या केवल स्वतन्त्रतावादी न होकर सामाजिक, राजकीय, सांस्कृतिक शैक्षिक और आर्थिक अधिकारों के प्रति अपने उन्नति के चरण स्थापित करती हुई आगे बढ़ती जा रही हैं जैनेन्द्र जी की नारी इस प्रयत्न में गिरी भी है और उठी भी है। ये नारियाँ भारतीय संस्कृति पर पति पर प्रेमी पर प्रेम पर वासना पर और माँ आदि स्वरूपों पर नये विचार पुराने विचारों पर चिन्तन करती है। जो पुरानी परम्परायें उसे पसन्द नहीं है। उसके प्रति संघर्ष करती है। जिन पुरानी परम्पराओं में उसे आदर्श दिखाई देता है उसके प्रति अपना कर्तव्य भी पूर्ण करती है। जैनेन्द्र के उपन्यासों की नारी विवाह पूर्ण प्रेम करती है और विवाहोपरान्त भी। एक तरफ अपने पतिवृत का कर्तव्य पूर्ण करने में सजग है तो दूसरी और प्रेमी से मिलनातुर भी। उसका आन्तरिक मन पति के प्रति विश्वास पाने के लिये सतीत्व का रूप धारण करता है। इस प्रकार जैनेन्द्र की नारी पुराने विचारों को नये एवं स्वतंत्र रूप से व्यवहार में लाती है। नारी के ये विचार पाठक को कुछ सोचने और चिन्तन करने को विवश करते हैं। इस प्रकार जैनेन्द्र के उपन्यासों की नारी बीसवीं शती की सांस्कृतिक संघर्षो की प्रतिनिधि है।, 1

पुरूष पात्रों की तुलना में जैनेन्द्र के स्त्री पात्र अधिक प्रखर जीवन्त या व्यक्तित्व सम्पन्न है। इनकी शक्ति या असहायता दोनों का महत्त्व है, ये व्यथा में हों या सहानुभूति में या यातना में कथानक के केन्द्र में है।

त्यागपत्र की मृणाल के व्यवहार में भी शुरू से एक असामान्यता है।

1. हिन्दी उपन्यासों मं नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण – डा0 विमलसहान्त्र बुद्धे, पृष्ठ संख्या – 221–222–223

विवाहोपरान्त एकाधिकार बार टूटकर वह नितान्त यातना या नरक में अपना जीवन व्यतीत करती है। यातना सहकर भी मृणाल अपने दुर्भाग्य के लिये अपने को ही उत्तरदायी ठहराती है। परित्यक्ता मृणाल के जीवन में वह कौन सा तत्व रहा होगा जो उसे यातना का पड़ाव ही स्वाभाविक लगता है। यातना ने ही मृणाल को अधिक दीप्त या मूर्त बनाया है जैनेन्द्र जी यातना जीवी मृणाल से यह अपेक्षा नहीं रखते कि वह समाज की मर्यादा को तोड़े। मृणाल का टूटना उन्हें प्रिय है। उसे वे गौरव दे सकते है। मृणाल को पाठक असमय वयस्क पाते है। अपना अनुभव मृणाल की नियति का अत्यन्त क्षीण अनुभव है एक विशेष ढांचे में पिसती हुई मृणाल लगे एक उल्लेख चरित्र बनाने में जैनेन्द्र को एक हद तक सफलता मिली है।

इस प्रकार जैनेन्द्र के त्यागपत्र उपन्यास में पात्र अधिसंख्य उदाहरणों में कहीं अपने भीतर रूके हुए हैं वे जिस परिस्थिति के आधीन हैं, उसे एक अचानक धक्के से तोड़ देने की क्षमता उनमें नहीं दिखाई देती। यहां जैनेन्द्र के इस वक्तव्य अंश में उनकी मान्यता स्पष्ट है

''मैं यह मानता हूँ कि परिस्थितियों को तोड़ने में जो मुक्ति समझी जाती है कि जिसको विद्रोह विप्लव कहते है, क्रान्ति इत्यादि कहते है, वह मुक्ति है ही नहीं। उसको मैं मुक्ति नही मानता हूँ। जहां विद्रोह अधिक है मैं समझता हूँ कि वहां फड़फड़ाहट तो है लेकिन उसका फल मुक्ति नहीं है। इसलिये परिस्थिति और व्यक्ति इन दोनों में सम्बन्ध वह बना डालना जहां पर समझें कि तोड़ना ही सिद्धी है, वहां भ्रम है। तो अन्त में यह प्रकट होगा कि परिस्थिति वह चीज है जिसके साथ संधि की जा सके तो आदमी का विकास आरम्भ होता है। इसलिये मेरा पात्र परिस्थिति का धक्का देकर तोड़ने में उतना उपत नहीं मालुम होता, परिस्थिति में मिसमिसाता दिखता है। लड़ता–झगड़ता है तो ऐसा मालुम होता है, कि अपने साथ ज्यादा लड़ता झगड़ता है। अपनी रूचि अरूचि अपनी अर्न्तवृत्तियों के साथ कम लड़ता है। यह मेरे पात्र में इसलिये दिखाई देता है कि मैं यह मानता हूँ कि चेतना परिस्थितियों का उपयोग करके अपने को विकसित कर सकती है। परिस्थिति को टक्कर देकर उसमें कोई छेद या दरार पैदा करके चेतना विकास पाती है, ऐसा में नहीं मानता।'' 1

जैनेन्द्र के पात्रों की अपूर्णता, अतृप्ति, कुण्ठा, असन्तोष, विद्रोह आदि लक्षण कहीं न कहीं यौन प्रसंगों समस्याओं या स्त्री पुरूष सम्बन्धों की ग्रन्थियों से जुड़े हैं इनके उपन्यासों में पुरूष पात्र नारी के सम्पर्क में आने पर अपने जीवन में एक नया मोड़ लाते है।और नारी के जीवन में जो विपर्यय आता है उसके भूल में कोई

जैनेन्द्र और उनके उपन्यास – डा0 परमानन्द श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या – 79 नकोई पुरूष अवश्य होता है।

नन्द दुलारे बाजपेयी ने जैनेन्द्रजी के व्यक्ति चरित्रों की सीमायें लक्ष्य करते हुये लिखी है– व्यक्तियों और पात्रों और पात्रों का चित्रण यदि एकदम ऐसी भूमि पर किया जाय जिससे सामाजिक नैतिकता का या प्रचलित व्यवहारों का सम्बन्ध न हो और यह आशा की जाये कि वह पात्र और चरित्र सामाजिक व्यवहारों की कसौटी पर परखे जायें बल्कि उनके लिये सब प्रकार की छूट होते हुये भी वे महान माने जाये तो यह एक अतिशंय असाधारण मांग होगी.....विद्रोही कलाकार भी जिस नवीन सामाजिकता का निर्माण करता है उसमें एक औचित्य और व्यवस्था रहा रहती है। जैनेन्द्र जी का विद्रोह इस प्रकार का नहीं है। वे नवीन सामाजिक मूल्यों का निर्धारण नहीं करते, वे तो अपने पात्रों के समाज–विरोधी स्वरूप का एक रहस्यवादी दार्शनिकता के आधार पर समर्थन करते जाते है। इसे इस साहित्य सम्बन्धी स्वस्थ रचनात्मक दृष्टि नहीं कह सकते। विडम्बना यह है कि जिन्हें जैनेन्द्र अपना आदर्श मानते है उनके चरित्रों की दुनियां की कोई अनुरूपता जैनेन्द्र के यहां नहीं दिखाई देती। 1

1. जैनेन्द्र और उनके उपन्यास– डा0 परमानन्द श्रीवास्तव, पृष्ठ संख्या – 84

इस प्रकार हम कह सकते है कि इस उपन्यास के पात्र उपन्यासकार जैनेन्द्र की इच्छानुरूप ही है। उनकी अतृप्ति, अपूर्णता, कुण्ठा, दमन या मुक्ति सभी कुछ जैनेन्द्र जी की इच्छानुसार नियन्त्रित हैं वे तो एक व्याख्या में स्वीकार ही कर चुके हैं–

''पात्र कोई परस्पर की अनुकूलन होना उसमें जरूरी नहीं है, बल्कि प्रतिकूलता और अर्न्तविरोध भी उनमें हो सकते है।.....पात्र की या व्यक्तित्व की निजता में जितना गहरा और गम्भीर विरोध समा सकता है उतना ही उसका महत्त्व है।''

सहायक ग्रन्थ– सूची

पुस्तक का नाम लेखक

1. त्यागपत्र (उपन्यास) – जैनेन्द्र कुमार
2. हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण – डॉ0 विमलसहान्त्र बुद्धे
3. जैनेन्द्र और उनके उपन्यास – डॉ0 परमानन्द श्रीवास्त